महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर

कुलगीत

जयतु जयतु विश्वविद्यालय, जयतु जयतु विश्वविद्यालय।
महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय।।
महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय।।

बृज धराधाम में सुवासित, ज्ञान-विज्ञान का आधार है।
सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, आत्म विकास का द्वार है।।
जयतु जयतु.....2

विश्वधरोहर खग विहार में, कूजित कलरव गान है।
जहाँ दिखाई देती वसुधा, सकल कुटुम्ब समान है।।
उद्यमिता की राह चलकर, सभी बनें हम सभ्य सुशील।
हो क्षमावान, गुणवान, दयावान, प्रखर और कर्मशील।।
अजेय दुर्ग लोहागढ़ हमारा, पूर्व दिशा का द्वार है।
सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, ज्ञानविकास का द्वार है।।
जयतु जयतु.....2

हो शिक्षित समाज सब, गूँजे वैभव मंगलमय कल्याणी।
आदर्शों मानव मूल्यों की, फैलाये विश्व में गाथा ज्ञानी।।
अनुसंधान और ज्ञान में, विधि के विविध विधान में।
कला और विज्ञान में, नवतकनीक के संधान में।।
संवाद और व्याख्यान की, बरस रही रसधार है।
सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, सबके विकास का द्वार है।।
जयतु जयतु.....2

देश उन्नति और विकास का, लक्ष्य ये हमने ठाना है ।
महिलाओं की रक्षा और, गुरुजन का मान बढ़ाना है।।
अज्ञान तिमिर की घटा हटाकर, ज्ञान आलोक फैलाना है।
सकल इह विश्व में फिर, निज का मुकाम बनाना है।।
हर एक एक के प्राणबल का, होता नवसंचार है ।
सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, हर एक विकास का द्वार है।।
जयतु जयतु.....2

महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय।
महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय।।
महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय।।।

रचनाकार : डॉ. लालाशंकर गयावाल
सह आचार्य संस्कृत, रामेश्वरी देवी राजकीय कन्या महाविद्यालय, भरतपुर